पहरेदारिन

ओ पड़ोसिन! पता नहीं क्या कर दिया है तुमने? लगा है, इस वर्षों पुरानी धरती से मेरे मन को किसी ने खोद डाला हो। कभी लगता है, मेरी आंखों के आगे कोई मशाल जल रही है। उसमें रोशनी तो है मगर... ?

कभी लगता है कि वह राह, जो तुमने दिखाई है उस पर चलते हुए मशाल के आगे परवाने की तरह जल कर भस्म तो नहीं हो जाऊंगा।

खैर! तुम से मन का बोझ हल्का करने लगा हूं। पता नहीं, ये सब बातें तुम तक पहुंचेंगी भी या नहीं? फिर भी, कलम अपनी लेखनी को रोक नहीं पा रही। उस दिन की बात याद आ रही है। जिस दिन हम इस मकान में रहने के लिए आये थे, बहुत फुर्ती के साथ तुम पानी भरी बाल्टी और झाड़ू ले आईं थीं और भोजन भी देकर गईं थीं। तब मेरी पत्नी दया ने तुमसे पूछा था, "किस रिश्ते से इतनी खातिरदारी कर रही हो बहिन? कहीं पिछले जन्म में बहिन तो... ?"

तुमने बीच में ही उसकी बात काटते हुए कहा था, "क्यों, पिछले जन्म तक क्यों जा रही हो, इस जन्म में जो हम पड़ोसी हैं। यह रिश्ता क्या तुम्हें कम लग रहा है जो तुम ... ?" फिर तुम दोनों ठहाका लगाकर हंस पड़ीं थीं। उस समय मेरे मन ने तुम्हारा एक नाम रखा था-लहर !

लेकिन मेरे मन में नाम तो बदलते ही रहे हैं तुम्हारे लिए।

एक दिन की बात-

तुम उस दिन तुअर की दाल का कटोरा भर कर लाईं थीं। फलियां और टिण्डे डाल कर तुमने इस दाल को महका दिया था। लेकिन मेरा ध्यान उस महक से हट गया था क्योंकि उसी समय हीरल ने घर में प्रवेश किया था।

हीरल ने मेरे सामने वाले पलंग पर बैठ कर बतियाना शुरू कर दिया था। तुमने एक नजर हीरल के शर्मीले से चेहरे पर डाली और वही नजर मेरी पत्नी के तमतमाते चेहरे पर डाली। तब तुम मेरी पत्नी का हाथ पकड़ कर उसे रसोई में ले गईं थीं। तुम्हें क्या बताऊं, मुझे जब भी हीरल मिलती है तो सारी दुनिया भूल जाता हूं। तुम उस वक्त मन ही मन हंस रही होंगी कि हीरल तो मेरी दया से अधिक सुन्दर नहीं है। पागल, हम मर्द केवल सुन्दरता के ही पुजारी नहीं होते हैं। स्त्री की आंखों से झांकती लज्जा भी हमें कम दीवाना नहीं बनाती। जैसे हौले-हौले दरवाजा खोलकर किसी रूप मणि के दर्शन करने से आनन्द मिलता है और खुले दरवाजे से झांकते किसी देवता को देखने पर भी आनन्द

नहीं मिलता, उसी तरह किसी पराई नारी और अपनी नारी के हृदय तक पहुंचने के आनन्द में भी अन्तर होता है। परन्तु तुमने तो यह सब कुछ देखा ही नहीं। तुम तो उस समय मेरी दया के साथ रसोई में बातें कर रहीं थीं। जानता हूं, दया ने तुम्हें क्या-क्या बताया होगा। उस गंवार ने यही बताया होगा न कि हीरल ने उसका घर बर्बाद कर दिया है? पति छीन लिया है। यदि वह तुम्हारी तरह पढ़ी-लिखी होती तो शायद यह कहती, "हीरल ने जो आनन्द और सुख मेरे पति को दिया है, इसलिए मैं उसके पैर चूमना चाहती हूं।" लेकिन तुम हो कि उस गंवार की हर बात को माफ कर देती हो।

हीरल के जाने के बाद दया मुंह फुलाकर मैले कपड़े निकालने लगी थी। तब तुम मेरे सामने वाले पलंग पर बैठ कर उसे देखती रहीं थीं। मैं भी उसे देखता रहा। उसकी हर हरकत में जलन व ईर्ष्या थी। जब वह नन्हीं कोशी की बांह पकड़ कर बोली, "आजा लड़की, तुझे नहला दूं।" तब तो बिल्कुल राक्षसी लग रही थी। और जब कोशी ने खुद को छुड़ा कर बाहर भागना चाहा तब उसने बालों से पकड़कर उसे कुर्सी पर पटक दिया था। कोशी के दांतों से खून बहने लगा था। मैंने चिल्लाते हुए कहा था, "दया !" सच कह रहा हूं, यदि तुम न होतीं तो मैं दया को चांटा मार देता। तुमने तो उस समय कमाल ही कर दिया था। एक हाथ से बच्ची को गोद में उठाकर दूसरे हाथ से रोती हुई दया को गले से लगा लिया था।

मैं कहता आया हूं, संतों की संगत से खौलता मन भी शीतल हो जाता है। परन्तु उस दिन तुम्हारे गले लगकर दया की जलती आंखों से जो बदली बरसी उसने तो मेरा बाजा ही बजा दिया। मैंने कोशी को गोदी में लेकर दया को खरी खोटी सुनाना शुरू किया तो तुमने मेरे मुंह पर हाथ रखते हुए कहा था, "फटी हुई को ज्यादा क्यों फाड़ते हो?" और जब तुम, कोशी का मस्तक चूम उसे कुल्ला करा लाईं थीं तब मेरे दिल ने तुम्हें एक और खिताब दे डाला था, ममता ! एक ही समय में तुम हम तीनों को ममतामयी नजरों से कैसे देख पा रहीं थीं? यह बात मैं आज तक समझ नहीं पाया हूं।

आज शाम को जब तुम्हारे दरवाजे के करीब से गुजरते हुए घुंघुरुओं की आवाज सुनी तो दिल ने कहा निश्चित रूप से तुम ही अन्दर नाच रही हो। तुम्हारी ऊषा के पैरों की आवाज भी आ रही थी। मैं बाहर चबुतरे पर बैठ गया । तुम्हारा सुरीला गीत भी सुना और छनक-छनक घुंघुरुओं की झंकार भी।

मुझे बाहर सर्दी लग रही थी। हवा नारियल के पेड़ों पर से हंसती हुई गुजर रही थी। रात का अन्धेरा मुझे छुपाए हुआ था। फिर भी डर लग रहा था कि कहीं किसी बाल्कनी से कोई देख न ले।

उसी समय तुम्हारे बच्चे की चीख सुनाई दी, दादा ! लगा, तुम आकर दरवाजा खोलोगी। सब नसें अकड़ सी गईं। दूसरे ही पल तुम्हारे पति की आवाज सुनाई दी। मैं समझ गया था कि वह गली वाले दरवाजे से तुम तक पहुंचा है। और फिर तुम दोनों की

मधुर हंसी सुनकर मेरे मुंह से ठण्डी सिसकारी निकल गई। काश, ऐसी मधुर हंसी एक दिन के लिए ही सही मेरे घर में भी आ जाए। मनपसन्द औरत के बिना भी जीवन कैसा? उस समय दिल के हर एक कोने ने तुम्हें पुकारा था- सती !

तुमने शायद मेरे दिल की आवाज सुन ली थी। नहीं तो उसी पल दरवाजा खोलकर क्यों पुकारतीं,''दादा!'' और मुझे तुम्हारे स्वर्ग जैसे घर का दीदार करके लगा था मानो कृष्ण और राधा के युग में पहुंच गया था मैं।

तुमने जब अपने पति से मेरा परिचय करवाते हुए कहा था, ''यह नए पड़ोसी हैं जो अपने बच्चों को आपकी ही तरह प्यार करते हैं।'' तब पता है, कितना शर्मिन्दा कर दिया था तुमने मुझे। हकू को बताते हुए तुमने कहा था, ''दादा अपनी कोशी को इतना चाहते हैं कि जब कोशी को उसकी मां मारती है, तो इन्हें बहुत पीड़ा होती है।''

और हकू गर्दन नीची कर रहा था, ''दया, कोशी को मारती ही क्यों है? यदि आप यह जान लेते तो शायद इतना दुख न उठाते।'' मुझे हकू की इस बात पर पहले तो गुस्सा आया परन्तु जब तुम मेरी ओर प्रश्नवाचक निगाहों से देखती हुई चली गईं तब मैं घबरा गया था। जब तुम्हारे पति ने कहा, ''औरतें बहुत भावुक होती हैं। उनके दिल पर छोटी-छोटी सी बात भी गहरा असर डालती है। यह हमारा काम है कि उनके दिल में जो गुस्सा भर गया है, उसे दूर कर दें। फिर देखो, नारी बिना कांटे का नाजुक सा फूल लगती है कि नहीं।''

मैंने तुम्हारी तरफ इशारा करते हुए कहा था, ''भाई, आप सती को देखकर ऐसा कह रहे हो कि औरतें फूल सी होती हैं, क्योंकि आपके नसीब में फूल ही लिखा था। मेरी दया को देखकर आप ऐसा सोच भी नहीं सकते। सब नसीब की बात है, किसी का कोई दोष नहीं।''

हकू ने जिस अंदाज से सिर हिलाते हुए कहा था कि मैं नसीब को नहीं मानता। उसने मेरे वर्षों से स्थापित विश्वास की जड़े हिला दीं। मैं व्यापारी हूं शायद इसलिए मेरा विश्वास भाग्य और नसीब में ज्यादा है।

परन्तु अचानक ही तुम्हारे पति को दो व्यक्ति बुलाने आ गए और वह उनके साथ चला गया। पड़ोस में कहीं झगड़ा हुआ था जिसका वे फैसला करने गए थे। ''मुझको भला क्यों नहीं कहा गया?'' मेरे सम्मान को ठेस सी लगी थी। ''यह लोग क्या दिखाना चाहते थे?''

और तुम होंठों पर मुस्कान लाकर बोलीं थीं, ''आपको दुख है न, कि पड़ोसी, केवल मेरे पति को ही साथ लेकर गए हैं। आपके दुख को मैं अच्छे से समझती हूं।'' तब मेरी आंखों में पता नहीं क्यों पानी भर आया। कोई भी मुझे आज तक इस तरह नहीं समझ पाया था। तुमने सिर झुकाते हुए कहा था, ''मुझे पता है, हीरल आपके पास केवल हमदर्दी हासिल करने आती है। परन्तु पड़ोसी पता नहीं क्या-क्या बातें बनाते हैं। और

आपकी दया तो हीरल के प्रति आपकी हमदर्दी को सहते सहते टूट चुकी है। जो स्त्री अपने बच्चों को मार-मार कर जख्मी कर दे, जानते हो उसके अन्दर कितने जख्म भरे होंगे ?'' बोलते-बोलते तुम्हारी आंखों में आंसू आ गए थे।

सती, पता है उस वक्त मैं कितना सकपका गया था। मेरा मन ही निचुड़ गया था। तुम पराई होकर भी मेरी पत्नी की पीड़ा से व्याकुल हो उठीं थीं और मैं जाने कितनी बार उस पर हाथ उठा चुका था। लेकिन यह ज्ञान तो मुझे था ही नहीं कि जब स्त्री का दिल घायल होता है तब वह, कोमल फूल से बच्चों पर अपना गुस्सा निकालती है।

तुमने कहा था, ''नारी की गोद बहुत बड़ी होती है। वह बच्चों की इतनी शरारतें और हठ सह जाती है कि वीरों की वीरता भी इसके आगे लज्जा जाती है। लेकिन जब पति की आंखों में किसी दूसरी स्त्री का स्थान खुद से ऊपर देखती है तब वह अपनी पूरी कोमलता, अपने अन्दर समेट लेती है।'' और सती तुम्हारे शब्द मुझे बहुत प्यारे लगे थे। जब तुमने कहा था, ''पति अपनी स्त्री पर प्यार और सच्चाई की जितनी बरखा करेगा उतना ही प्यार वह बच्चों, सहेलियों और पड़ोसियों पर न्यौछावर करेगी।''

मैंने, उस समय तुमसे हंसते हुए कहा था, ''सती, तुमने तो हकू को अमर कर दिया।'' परन्तु आज तकिए पर सिर रखते हुए जिस मशाल की रोशनी को रहबर की सूरत में देख रहा हूं, वह सूरत तुम्हारी नहीं हकू की है। उस दिन तुम्हारे घर से लौटकर सारा समय दया की हर हरकत को चाहत से देखने, उसे प्रेम के सागर में डुबो देने की ही कोशिश की थी मैने। तुम्हें पता है, मैंने आज उसे अपने साथ बैठा कर भोजन खिलाया है। सती ! सच कह रहा हूं यह नारी उस वक्त इतना शरमाई थी जितना कि हीरल आज तक नहीं शर्माई है। मगर हीरल दुखी है। उसका पति उसे जरा भी नहीं चाहता। मैंने उसका कितना साथ दिया है! केवल दया को खुश करने के लिए उसे छोड़ दूं, यह भी तो बहुत कठिन है। लेकिन तुम्हारे शब्द बार-बार आकर मेरे आगे खड़े हो जाते हैं, ''दादा आप अपने बच्चों को कलाकार के रूप में देखना चाहते हैं न ? तो उनकी परवरिश के बारे में भी सोचो। जिन फूलों पर पनपते समय ही ठण्डी आहों की बर्फ गिरेगी तो जब वे फूल बड़े होंगे तब उनकी पंखुडियां कैसे खिल पाएंगी ?''

नहीं सती ! मैं किसी भी मूल्य पर अपने बच्चों का भविष्य बिगाड़ने के लिए तैयार नहीं हूं। तुम्हारी ऊषा इतनी कोमल और मेरी कोशी इतनी ढीठ। यह सब देख चुका हूं। सती बार-बार मेरे मन के अन्दर से आवाज आती है कि हीरल को भुला देना बहुत कठिन है। लेकिन फिर सोचना हूं, किसान अपनी फसल को बचाने के लिए जैसे सारी-सारी रात चाहे सर्दी, गर्मी या बरसात हो तब भी पहरा देता है वैसे ही मैं भी दूंगा।

हां, जरूर दूंगा। मगर जिन्दगी के कुछ अन्धेरे, सर्द पलों में अगर भटक जाऊं तब तुम ही बनना मेरी पहरेदारिन !

अनुवाद : गायत्री

□□□